सम्बंधों में मिठास घोलो

सुंधरा के प्रत्येक कोने से सम्बन्धों में बढ़ती हुई कड़वाहट की आवाज सुनाई देती है। मानव मन चीत्कार कर कह रहा है कि जिनके लिए मैने जीवन भर इतना सब-कुछ किया, उनका मुझसे ऐसा व्यवहार...असहनीय...निन्दनीय...। सम्बन्धों का सुख बाह्य रूप से तो दृष्टिगोचर होता है, किन्तु अंदर झांककर देखने से विष और पीड़ा के ही दर्शन होते हैं। कोई किसी से खुश नहीं, कोई किसी से संतुष्ट नहीं, सदा ही दूसरों की शिकायतें, मनुष्य के मन को व्याकुल कर रही हैं।

पारस्परिक सम्बन्ध -जिनका प्रारंभ स्नेह रूपी बीज से ही होता है और जिनके बिना जीवन का कोई मूल्य ही नहीं रह जाता, क्यों बिगड़ गये ? क्या गलती हो रही है ? जबकि हम सभी जानते हैं कि जीवन में सभी को विविध सम्बन्धों में आना पड़ता है, विभिन्न संस्कारों के व्यक्तियों से व्यवहार करना होता है, जीवन कहीं भी अकेला नहीं है। जीवन के सुख व दु:ख, हार व जीत भी दूसरों पर आश्रित हैं। और यदि सम्बन्धों में कड़वाहट भर गई तो जीवन का सुख छिन जाता है, जीवन की शान्ति भस्म हो जाती है और मनुष्य प्रेम की प्यास में, प्यासी दृष्टि से चहुं ओर निहारने लगता है।

तो सम्बन्ध की शुरूआत प्रेम है, इसका मध्य जहां-तहां कड़वाहट से भरा है और अंत...? अंत लम्बे मध्यकाल पर आधारित रहता है। ज्यों-ज्यों मनुष्य सम्बन्धों को आगे बढ़ाता है, कुछ विकृतियां प्रवेश करके उन्हें जहरीला बनाने लगती हैं। हमें उनका एहसास होना चाहिए और सहज ही उन दीवारों को लांध जाना चाहिए। तो प्रस्तुत है कुछ मूल कारण व निवारण

सम्बन्ध बिगाड़ने वाला हमारा प्रथम शत्रु है -स्वार्थ..। जहां स्वार्थपूर्ण भावनाएं प्रबल हुईं और सबकुछ मटियामेट। स्वार्थ पूर्ति न होने पर मनुष्य आपसी स्नेह, नाते, पूर्वकाल के उपकार आदि सब कुछ भूल जाता है। स्वार्थी मनुष्य कितना निर्दयी बन जाता है -यह आज चारों ओर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। मां और बेटे का कितना निर्मल सम्बन्ध है। वह बेटा जिसकी मां ने सच्चे दिल से पालना की थी, जरा-सी स्वार्थ पूर्ति न होने पर मां को छोड़कर चला जाता है। पति, पत्नी का सम्बन्ध कितना सुखद है, परन्तु दहेज की स्वार्थ पूर्ति के अभाव में पत्नियों को जिंदा ही अग्नि के सुपुर्द कर दिया जाता है। कितना भयावह है यह स्वार्थ! इसकी सत्य कहानियों के तो ग्रंथ लिखे जा सकते हैं। जो आज अपने हैं, वही कल पराए हो जाते हैं।

अत: सम्बन्धों को सतत् मधुर बनाए रखने के लिए स्वार्थ का त्याग करना होगा, स्वयं से पूछना होगा कि स्वार्थ बड़ा या सम्बन्ध ? धन बड़ा या स्नेह, पदार्थ बड़े या आशीर्वाद का हाथ बड़ा ? परन्तु जो ज्ञान विहीन पशु-तुल्य मनुष्य धन और पदार्थों को ही जीवन का आधार मानते हैं वे स्वप्न में भी सच्चे सुखों की अनुभूति नहीं कर पाते। सम्बन्धों के अमृत में जहर घोलने वाला दूसरा सूक्ष्म शत्रु है -मनुष्य का स्वयं का ही जहरीला स्वभाव, अहंकारी भाव, चिड़चिड़ापन अथवा स्वयं को ही सब कुछ समझना। सचमुच स्वयं का कटु स्वभाव ही मनुष्य को सबसे ज्यादा परेशान करता है। हम एक ऐसी नारी को जानते हैं जो सदा ही दूसरों पर दोषारोपण करती है कि ये ये लोग मुझे बहुत तंग करते हैं, परन्तु जब तक उसे यह एहसास न हो जाए कि परेशान वह अपने स्वभाव के कारण ही है, उसकी परेशानी दूर नहीं होगी। उस देवी का नाम है सुखदेवी। परन्तु उसका अनुभव व काम वैसा नहीं है। न वह किसी को सुख देती और इसलिए न उसे सुख मिलता। तो स्वभाव को मृदुल व सरल बनाओ। मीठे स्वभाव से दूसरों के दिलों पर राज्य करो। तुम सबके हृदय में वास करोगे। परन्तु यदि तुम ऐसा नहीं करते तो सम्बन्धों में बिगड़ाव का फल भुगतने के लिए तैयार रहो, फिर यह शिकायत न करो कि देखो आज की नई पीढ़ी कितनी बिगड़ गई...सबकी राह अपनी बन गई है।

तुम भी सम्बन्धों का सुख ले सकते हो।

दूसरों से कामनाएं रखना भी सम्बन्ध बिगाड़ना है। एक मां सदा ही अपने बड़े बच्चों से अनेक कामनाएं रखती है। अपनी बहुओं से उसकी अनेक कामनाएं रहती हैं। वे उसकी सेवा करें, वे उसके लिए सुख-सुविधा के सामान जुटाएं। क्योंकि वह स्वयं को इनकी अधिकारी मानती है। वह प्राय: कहा करती है कि हमने बच्चों को पाला-पोसा, बड़ा किया, पढ़ाया, क्या अब बच्चों का कर्त्तव्य हमारी सेवा करना नहीं है। वह कब से आहवान करती थी कि घर में बहू आयेगी, मेरे पैर दबाया करेगी। परन्तु बहु आती है आधुनिक, वह स्वयं कामना करती है कि सास मेरी सेवा करे। बच्चे अपने काम में व्यस्त हैं और मां की कामनापूर्ति न होने से मां कुढ़ती रहती है, सदा अपने भाग्य को कोसती रहती है।

हमारे मन की कामनाओं से दूसरों की भावनाएं बदलती हैं। हमारी कामनाएं हमें कमजोर करती हैं। मां की कामनाएं ही बच्चों को उनसे दूर करती हैं। परन्तु यदि बूढ़ी मां का विवेक यह सोचने लगे कि मैने तो बच्चों के लिए अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया है, न कि एहसान। अब मैं स्वयं ही स्वयं की सेवा करूंगी। तो उसका अथकपन, अनासक्त व स्वार्थ रहित भाव बच्चों में भी सेवाभाव पैदा करेगा, बहू में भी निर्माण भाव पैदा करेगा और सम्बन्ध मधुर हो जाएंगे।

पारस्परिक सम्बन्धों को स्नेहपूर्ण रखने के लिए कुछ छोटी-छोटी परन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण बातों पर भी ध्यान रखना परमावश्यक है। कभी-कभी हम दूसरों की किसी बीती हुई गलत बात को बार-बार उछालते रहते हैं। बार-बार उस बात को बीच में लाकर मजा किरकिरा करते रहते हैं कि हां मैं जानता हूँ तुमने तब क्या किया था, मुझे समय पर मदद नहीं की थी, मुझे अमुक समय धोखा दिया था। परन्तु यदि दूसरा स्वयं को सुधार भी चुका हो, तो भी हम उसकी वही पुरानी बात चित्त में धारण किये रहते हैं और उसे उसी दृष्टि से देखते हैं। यह गलत है। इसी प्रकार किसी के किसी विशेष अवगुण को चित्त में धरकर हम उससे वैसा ही व्यवहार बनाए रखते हैं। मंदिर में जाकर तो हम मुक्त कंठ से गा लेते हैं -हे प्रभु मोरे अवगुण चित्त न धरो, परन्तु दूसरों के अवगुण चित्त पर धरने में हम जरा भी नहीं हिचकते। हमने देखा - एक परिवार में मां क्रोधी स्वभाव की थी। उसके दो बेटे, दो बेटियां, बार-बार उसे यही कहते थे -मां, तुम बड़ा क्रोध करती हो। यह सुनकर मां का क्रोध बढ़ता था - वह कहती थी मुझे शिक्षा देते हो...परिणाम यह था कि घर में सदा मनमुटाव, सदा अशान्ति।

तो कई जगह हमें दूसरों के अवगुणों को नगण्य समझना चाहिए, उनको बार-बार याद दिलाना नहीं चाहिए। उनके अवगुणों को महत्व नहीं देना चाहिए, तब हमारे सम्बन्धों में मिठास कायम रहेगा।

साथ-साथ घर में या दफ्तर अथवा दुकान में, हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपना काम पूरा करे। अधूरा काम छोड़ने पर भी कहा-सुनी होती है। यदि सभी अपना-अपना काम ठीक ढंग से पूर्ण करें तो किसी को भी किसी को कुछ कहने की नौबत ही न आवे।

ऐसे ही अपने कर्त्तव्यों का ख्याल रखना भी परमावश्यक है। जैसे मां-बाप ने बच्चों की पालना की, बच्चों को भी बड़ा होकर अपनी पत्नी व बच्चों में इतना तल्लीन न हो जाना चाहिए कि मां-बाप को पूर्णरूपेण भूल ही जाएं, न उन्हें महत्व दें, न मान। यही गलती प्रत्येक व्यक्ति करता है इसलिए बुढ़ापे में उसके बच्चे भी उससे वही व्यवहार करते हैं जो उसने अपने बूढ़े मां-बाप से किया। तो आओ, हम इस परंपरा को बदलें। थोड़ा ध्यान अपने बूढ़े मां-बाप की ओर भी दें। यद्यपि कोई भी किसी की सभी कामनाएं तो कदापि पूर्ण नहीं कर सकता, तो भी उनके लिए कुछ करना हमारा कर्त्तव्य भी है और पुण्य भी। इससे बूढ़े -शेष पेज 8 पर

पिंपरी (पुणे)। प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी, ब्र.कु.पारु, ब्र.कु.सुरेखा, उपमहापौर हीरानंद आसवानी व जवाहर कोठवानी।

फरीदाबाद। ब्र.कु.नीती और ब्र.कु.मधु को सम्मानित करते हुए राज्यमंत्री शिवचरण शर्मा। साथ हैं आर.पी.हंस, सतीश आहूजा।

देहरादून। अपर पुलिस अधीक्षक, जिला कमाण्डेन्ट डीपी जसोला व एसके साहू तथा होमगार्ड्स विभाग के अन्य अधिकारियों को ईश्वरीय संदेश देते ब्र.कु.मंजू।

खैरागढ़। दिव्य संस्कृति भवन के शिलान्यास समारोह में इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय की उपकुलपति मांडवी सिंह, ब्र.कु.ओमप्रकाश, नगरपालिका अध्यक्ष विक्रम सिंह, गुलाब चोपड़ा, ब्र.कु.पुष्पा।

बीकानेर। केन्द्रीय कारागार में आयोजित नशामुक्ति प्रदर्शनी में जेलर नरेन्द्र स्वामी, कर्मचंद मीणा, ब्र.कु.कमल तथा अन्य।

अम्बिकापुर। जनपद पंचायत अध्यक्ष कुंजबिहारी जायसवाल, त्रयम्बक शरण सिंह, ब्र.कु.विद्या तथा विधायक प्रतिनिधि शैलेष सिंह।